

कोंगथोंग की धुनें

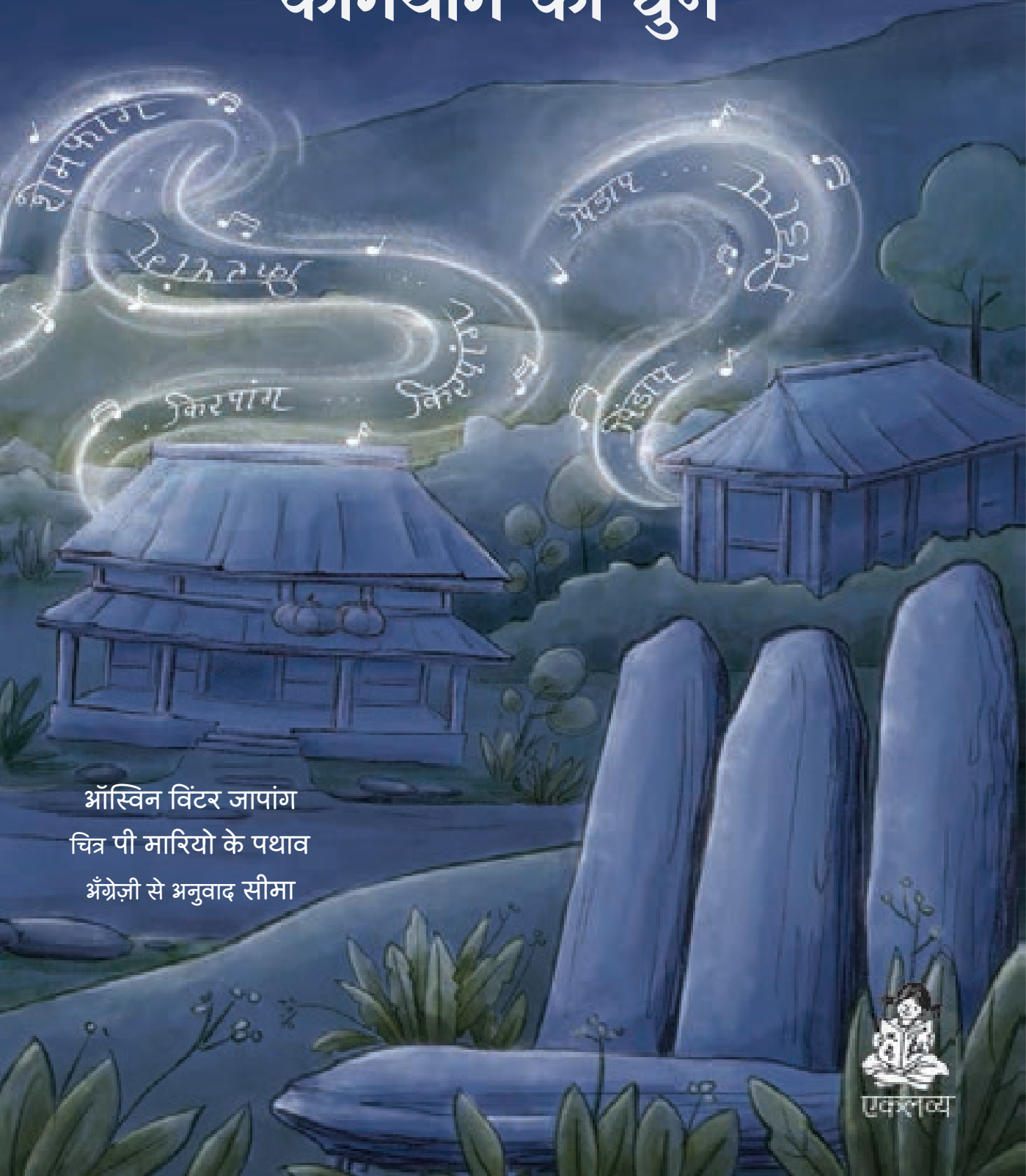
ऑस्विन विंटर जापांग
चित्र पी मारियो के पथाव



एकलव्य



कोंगथोंग की धुनें



ऑस्विन विंटर जापांग
चित्र पी मारियो के पथाव
अंग्रेज़ी से अनुवाद सीमा



एकलव्य

कोंगथोंग में आज का
दिन बहुत ही उजला
और खुशनुमा है।

शुद्ध





शिल्प

शिल्प

शिल्प



किरपांग बेहद उत्साहित है और अपने दोस्तों के साथ पिकनिक पर जाने के लिए उनके आने का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा है।





“बाय, मेई!” दोस्तों के साथ जाते हुए किरपांग अपनी माँ से कहता है।

शिदा, उसकी माँ, उसे देखकर
मुस्कराते हुए कहती हैं, “देर मत
करना, किरपांगा!”







किरपांग अपने दोस्तों, शेमफांग और पिंडाप के साथ रूट ब्रिज पार करता है। आगे आने वाले रोमांच के बारे में बात करते हुए वह कहता है, “जब पिकनिक का रास्ता इतना खूबसूरत है, तो हमारी पिकनिक कितनी शानदार होगी!”

“हम आखिरकार यहाँ हैं!” किरपांग कहता है। शेमफांग और पिंडाप उत्साह से पानी की धारा में कूद जाते हैं और एक साथ बोलते हैं, “हमने बहुत समय से इस धारा में कूद-फाँद नहीं की है!”







धारा में कुछ देर खेलने के बाद, शेमफांग वहीं आसपास चमकीले पानी के पत्थरों को ढूँढने लगता है। तभी अचानक उसकी नज़र झरने के पास मौजूद एक छोटी-सी गुफा पर पड़ती है। उसकी ओर इशारा करते हुए वह अपने दोस्तों से कहता है, “देखो! उस गुफा को मैंने पहले तो कभी नहीं देखा!”








गुफा के अन्दर पहुँचते ही सफेद मछलियों को देखकर पिंडाप हैरान रह जाता है। उनकी ओर इशारा कर वह कहता है, “वाह! देखो, मछलियाँ!” शेमफांग उसके पीछे-पीछे आता है और अचानक उत्साह से चिल्ला उठता है, “एक केकड़ा भी!” खेलते-खेलते तीनों दोस्त अपनी सैर में इतना मगन हो जाते हैं कि उन्हें वक्त का ध्यान ही नहीं रहता...








...और तभी उन्हें एहसास होता है
कि वे अपना रास्ता भटक गए हैं।





शेमफांग चिन्तित होकर कहता है, “हम शायद इस तरफ से आए थे!” पिंडाप बोलता है, “नहीं-नहीं, उस तरफ से!”




इस फँसाव के बीच, उन दोस्तों को
गुफा के बाहर से एक जानी-पहचानी
धुन सुनाई देती है...

मेव



मवानशान
नशान





वे उस धुन को ध्यान से सुनने लगते हैं, तभी किरपांग चिल्लाते हुए कहता है, “मुझे किसी की आवाज़ सुनाई दे रही है!” पिंडाप राहत महसूस करते हुए कहता है, “आसपास कोई है!”




किर

किर पांग

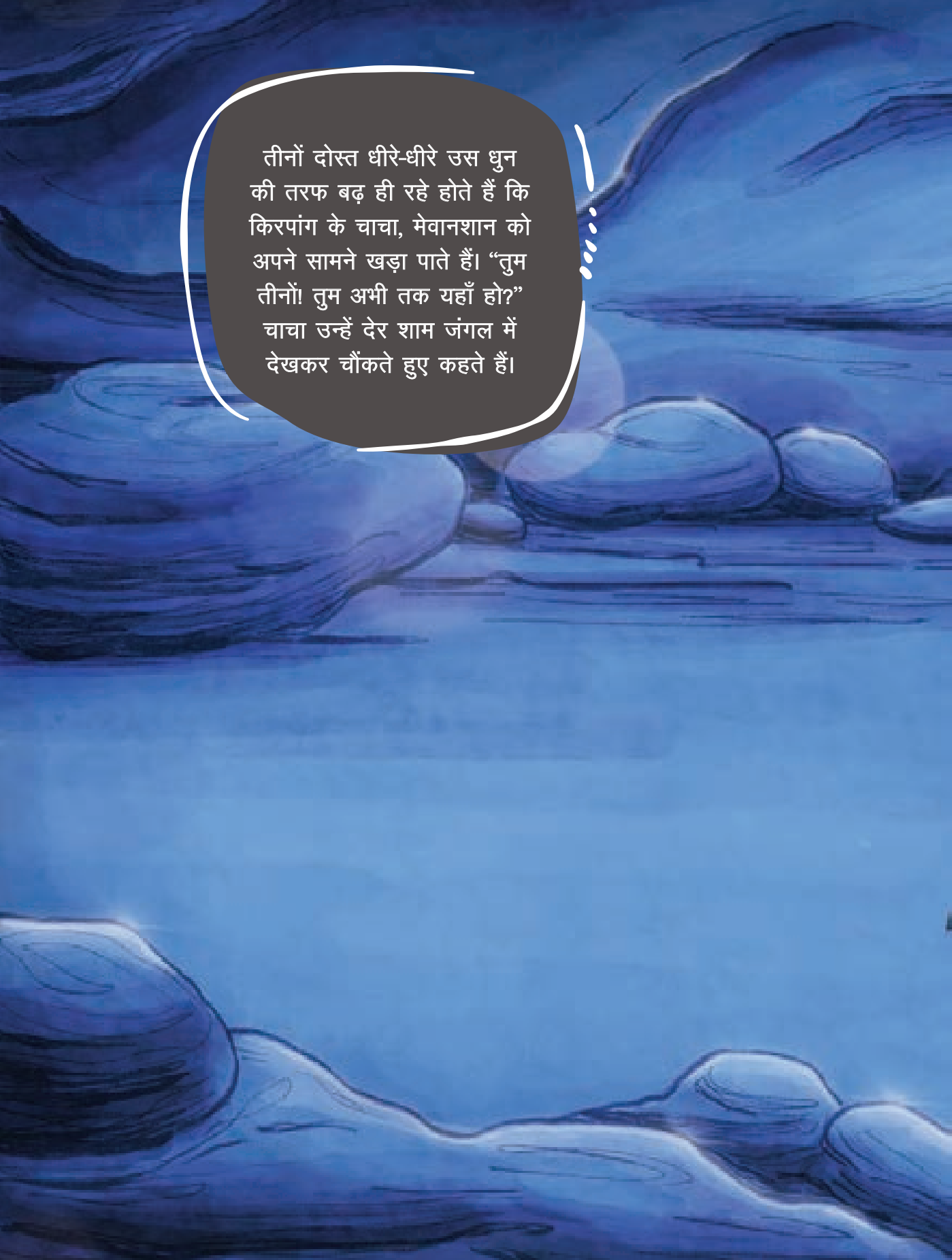
किरपांग उस चिर-परिचित धुन के जवाब में अपनी धुन गुनगुनाता है, और उसके दोस्त उम्मीद भरी निगाहों से उस तरफ देखते हैं।





अचानक, किरपांग को अपनी ही गुनगुनाई
धुन वापस सुनाई देती है। “कोई बेहद
करीब है,” वह आ रही आवाज़ की तरफ
उत्सुकता से देखते हुए कहता है।
शेमफांग और पिंडाप भी खुशी से उसी
तरफ देखने लगते हैं।





तीनों दोस्त धीरे-धीरे उस धुन की तरफ बढ़ ही रहे होते हैं कि किरपांग के चाचा, मेवानशान को अपने सामने खड़ा पाते हैं। “तुम तीनों! तुम अभी तक यहाँ हो?” चाचा उन्हें देर शाम जंगल में देखकर चौंकते हुए कहते हैं।





गाँव की ओर वापस जाते हुए, किरपांग के चाचा उससे कहते हैं, “तुम्हारी आवाज़ तो जलपरी जैसी है।”



“मेरी दादी मुझे गुफाओं व नदियों में रहने वाली और मधुर गीत गाने वाली परियों की कहानियाँ सुनाया करती थीं। मुझे खुशी है कि तुमने अपनी धुन गाई और मैंने तुम्हें उसे गुनगुनाते सुना।”



“मेई!” अपनी चिन्तित माँ को उसका इन्तज़ार करते हुए देखकर किरपांग चिल्लाता है।



“तुम्हारा बेटा झरने के पास एक गुफा में भटक गया था। शुक है कि मैंने उसे उसकी धुन गुनगुनाते हुए सुन लिया,” किरपांग के चाचा मेई को बताते हैं।
“मैंने तुमसे कहा था कि देर मत करना,” मेई किरपांग को डाँटती हैं।





और फिर उसे गले लगा लेती हैं।
किरपांग भी अपनी माँ को गले
लगा लेता है और कहता है, “अगर
कोंगथोंग की धुनें न होतीं, तो मैं
और मेरे दोस्त आज रास्ता भटक
जाते!”

शिदा अपने बेटे की धुन को
गुनगुनाते हुए कहती हैं, “हमारी
धुनें हमेशा हमारी मदद के लिए
मौजूद रहती हैं। इसीलिए हम उन्हें
गाते हैं। वे हमारी पूर्वज – हमारी
कुल माँ – से प्रेरित धुनें हैं। वह
हमेशा हमारी रक्षा करती हैं। यह
बात कभी मत भूलना और न ही
अपनी धुनों को – अपनी ‘जिंग्वाई
इओबेई’, कोंगथोंग की धुना!”







“मैं मेई की बात समझ गया। अभी मुझे अपने दोस्तों को पुकारने का मन कर रहा है। आज हमने वाकई बहुत मुश्किल दिन बिताया!” किरपांग मन ही मन सोचता है।

कहानी में आए खासी शब्द

जिंग्रवाई इओबेई: मोटे तौर पर इसका अनुवाद होता है – 'पूर्वज माँ का गीत'। यह खतरशानोंग और खासी पहाड़ियों के आसपास के इलाकों में प्रचलित एक सांस्कृतिक मान्यता है, जिसमें माँ-पिता, खास तौर से माँएँ, अपने बच्चों के लिए धुनें रचती हैं। ये धुनें एक तरह से उनके अनूठे नाम होते हैं जो उनके सांस्कृतिक सन्दर्भ में पहचाने जा सकते हैं।

हर व्यक्ति की अपनी एक खास धुन होती है, जिसे दूसरे लोग उन्हें बुलाते समय गुनगुनाते हैं। या जिस व्यक्ति की वो धुन होती है, वह दूसरों को यह बताने के लिए कि वह आसपास ही है यह धुन गुनगुनाता है। कहा जाता है कि समुदाय के सदस्य एक-दूसरे की धुनों को पहचानते हैं, इसलिए यह लोगों को बुलाने का एक प्रमुख तरीका है।

मेई: माँ।

किरपांग: 'खास'। यह कहानी के एक लड़के का नाम भी है।

पिंडाप: 'पूर्ति'। यह भी कहानी के एक लड़के का नाम है।

शेमफांग: 'बुद्धि'। यह भी कहानी के एक लड़के का नाम है।

मेवानशान: 'मदद के लिए आना'। यह कहानी में चाचा का नाम भी है।

आभार

टीएफएफपी टीम,

श्रीमती शिदाप खोंगसित का शुक्रिया अदा करती है।

श्री ब्रिंग खोंगजी और श्री होम खोंगसित को भारत के सीटी बजाने वाले गाँव की अनूठी धुन, जिंग्रवाई इओबेई, के बारे में विस्तार से बताने के लिए शुक्रिया।

कोंगथोंग का भी शुक्रिया, जिनके बिना यह किताब मुमकिन नहीं होती।

कोंगथोंग की धुनें

KONGTHONG KI DHUNEIN

कहानी: ऑस्विन विंटर जापांग

चित्र: पी मारियो के पथाव

डिज़ाइन: इशिता देबनाथ बिस्वास

अँग्रेज़ी से अनुवाद: सीमा

सम्पादन: सीमा



हिन्दी टेक्स्ट: एकलव्य फाउंडेशन, नवम्बर 2025

यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण <http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd> पर उपलब्ध है।

इस किताब का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु बिना बदलाव के मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक, चित्रकार और प्रकाशक का जिक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक से अवश्य सम्पर्क करें।

सोरमण्डला द्वारा विकसित

पहला संस्करण: नवम्बर 2025 (3000 प्रतियाँ)

कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबीबी (कवर)

ISBN: 978-93-48176-51-6

मूल्य: ₹ 90.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन

जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)

फोन: +91 755 297 7770-71-72

वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 255 5442



ऑस्विन विंटर जापांग

ऑस्विन विंटर जापांग एनईएचयू से (जिस समय यह किताब लिखी गई थी) लोककथाओं में पीएचडी कर रहे हैं। वे खासी मौखिक परम्पराओं, सांस्कृतिक अध्ययन और आधुनिक कविता में विशेषज्ञता रखते हैं। वे सेंट एंथोनी कॉलेज में पढ़ाते हैं और उन्होंने अकादमिक पत्रिकाओं और किताब के अध्यायों में काफी लिखा है, जिसमें *पीपल कॉल्ड शिलांग* भी शामिल है।



पी मारियो के पथाव

पी मारियो के पथाव आईआईटी गुवाहाटी से पीएचडी स्कॉलर हैं। वे संचार डिज़ाइन और ग्राफिक डिज़ाइन में विशेषज्ञता रखते हैं, और मेघालय की खासी-जैन्तिया जनजाति की जनजातीय कला पर खास तवज्जोह देते हैं। उनके कामों में मेघालय का राज्य चिह्न, लिविंग रूट ब्रिज पर एक ग्राफिक उपन्यास और मेघालय में वयस्क शिक्षार्थियों के लिए प्रोजेक्ट शामिल हैं। वे गाना गाने और थियेटर के भी शौकीन हैं।

तीन दोस्त। वे रहते हैं मेघालय के सबसे अनोखे
गाँवों में से एक, कोंगथोंग में। एक दिन तीनों
मौज-मस्ती के लिए पास के एक झरने की तरफ
निकल पड़ते हैं। वहाँ उन तीनों को कुछ ऐसा
दिखता है जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखा।
उसमें वे तीनों इतना रम जाते हैं कि उन्हें पता
ही नहीं चलता कि शाम ढलने को है। अँधेरे में
उन्हें अपने घर का रास्ता भी नहीं सूझता।
अब वे तीनों अपने घर पहुँचने के लिए क्या
तरकीब भिड़ाएँगे?

या फिर कोई 'धुन' गुनगुनाएँगे!



एकदमलया

मूल्य: ₹ 90.00



9 789348 176516



MANDALA

Centre for Accelerated Development